International Journal of Information Movement Vol.4 Issue VI (October 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 1-3

सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में ई–बुक्स की अनिवार्यता का अध्ययन

Mohita Pandey
Cataloguer
UP Legislative Assembly, Secretariat, Lucknow

Anand Prakash Srivastava
(Guest Lecturer)
(Government Polytechnic Lucknow)

सारांश

कहते है कि किताबें ही आदमी की सच्ची दोस्त मानी जाती है। युग बदल रहा है लोगों के पास सयम की कमी आती जा रही है। पुस्तकों को पढने का भी तरीका परिवर्तित होता जा रहा है, अब युग डिजिटल है तो पुस्तकें भी डिजिटल है। शोध से जानने का प्रयास किया गया है। किताबों का डिजिटल रूप पाठकों और विद्यार्थियों के बीच किस तरह से स्थापित हो रहा है तथा इससे पाठकों से क्या लाभ मिल रहा है। ई–पुस्तकों का पाठक वर्ग किस तरह का है। उसकी उपियोगिता क्या है। पुस्तकों के विकल्प के रूप में ई बुक्स के महत्व को समझाना है। ई–बुक्स के महत्व को समझना है। ई बुक्स का ट्रेड तेजी से जोर पकड रहा है और अंग्रेजी के साथ साथ भारतीय भाषाओं में भी ई बुक्स खूब दिखने लगी है। शोध से पता चला है कि जो लोग किताबों कों सहेजने अैर उसको संचय करने की चिंता को दूर किया है ई बुक्स ने। जिससे हर तबका लाभान्वित हुआ है। किताबों को विद्यार्थी अब बोझ नहीं समझता है जो युवा वर्ग पुस्तको को तकियानूसी समझता था। एक बात और सामने निकलकर आयी है कि पाठकों को ही बेहतर मानते है, शोध के दौरान एक बडी बात सामने निकल कर आयी है अभी भी ई बुक्स के पढने वालों में एकाग्रमा की कमी होती तथा वे अपने को बेहतन समझ पाते है। अपनी उपयोगिता और पाठकों की रूचि को देखते हुए आने वाले वक्त में ई–बुक्स का महत्व बहुत अधिक बढने वाला है।

प्रस्तावना

ई– पुस्तक (इलेक्ट्रानिक पुस्तक) का अर्थ है डिजिटल रूप में किताबों, ई–पुस्तकें कागज के बजाय डिजिटल संचिका के रूप में मिलती रही है। जिन्हे कम्प्यूटर, मोबाइल, अन्य यंत्रों पर पढा जा रहा है। इनको इंटरनेट पर भी छापा, बांटा तथा जा सकता है। ये किताबें कई फाइल फार्मेट में होती है। जिनमें पीडीएफ/पोर्टेबल, डाक्यूमेंट फार्मेट/एक्सपीएएस इत्यादि शामिल रहते है। इनमें पीडीएफ सर्वाधिक प्रचालित जाना जाता है। पुस्तकों को पढने के लिए कम्प्यूटर (तथा मोबाइल) पर एक सॉफ्टवेयर की आवश्यकता रहती है। जिसे ई–पुस्तक भी कहते है। भारत में भी ई–बुक्स का ट्रेड तेजी से बढ़ रहा है। विश्व प्रसिद्ध दिल्ली पुस्तक मेले में ई बुक्स को मुख्य थीम बनाकर भारतीय प्रकाशनों के संगठन ने भी ई बुक्स ई बुक्स में अपनी सहानुभूति प्रकट की है।

1.0 ई–बुक्स पुस्तकें बनाने के तरीके— छपी हुयी सामग्री को स्कैनर के द्वारा डिजिटल रूप में परिवर्तन करके उसे ई पुस्तक का रूप दिया जा सकता है।

कम्प्यूटर पर टाइप की गयी सामग्री को को विभिन्न साफ्टवेयरों के द्वारा ई पुस्तक के रूप में बदल सकते है।

2.0 उद्देश्य— लोग कहते है किताबें ही मनुष्य की सच्ची दोस्त है युग बदल रहे है मनुष्यों के पास समय की कमी आती जा रही है। पुस्तकों को पढने का तरीका बदल गया है। जमाना डिजिटल है तो पुस्तकें भी डिजिटल है खोज के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि किताबों का डिजिटल रूप पाठकों और छात्रों के मध्य किस तरह से स्थापित हो रहा है तथा पाठकों को क्या लाभ मिल रहा है।

3.0 शोध प्राविध–इस खोज को पूर्ण करने के लिए मैने फोकस ग्रुप स्टडी विधि का उपयोग किया है। इसको सुविधानुसार निदर्शन पद्धति से भोपाल में स्थिति चार विश्व विद्यालयों को चयनित किया है जो निम्नलिखित हैः मानखलाल, चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारित एवं संचार विवि, बरकत उल्ला विवि, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विवि आरकेडी एफ विवि से हर एक विश्व विद्यालय से 10 छात्रों 10 छात्राओं को चनित किया। स्नातकोत्तर तथाा एम फिल कक्षा के ऐसे 10 छात्र और छात्राओं का समूह बनायाजो ई बुक्स का प्रयोग कर रहे है। इस खोज कार्य में कुल 30 छात्र तथा छात्राओं की सह भागिता रही। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो0 डा0 हरीश और जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय दिलीप शाक्य का साक्षात्कार किया गया दोनों प्राफोसेर ई बुक्स का प्रयोग करते है।

4.0 विश्लेषण–चर्चा और साक्षात्कार के दौरान जो बाते सामने आती है। उनसे पता चला कि लोग किताबों से दूर चले गये थे, वो अब ई बुक्स के माध्यम से किताबों को पढने लगे है और किताबों को सहजने और उनका संचय करने की चिंता को दूर किया गया है ई बुक्स ने। जिससे हर तबका लाभान्वित हो रहा है। किताबों को विद्यार्थी बोझा नहीं समझता इसके अलावा परिचर्चा में अन्य कई महत्वपूर्ण तथ्य निकलकर सामने आये है। जो निम्नलिखित है–

1–युवा वर्ग पुस्तकों को तकिया नूसी समझता है, जिसके लिए लाइब्रेरी में बैठकर पुस्तकों का अध्ययन करना मुश्किल था। ई बुक्स के आने से वर्ग में बहुत अच्छे लेखक और पाठक सामने आये है।

2–सभी वर्गों के साथ चर्चा करने पर सबसे बडी बात निकल कर आयी कि ई बुक्स सस्ते है। इनकी लोक प्रियता का सबसे बडा कारण भी है।

3–इस परिचर्चा में एक बात सामने निकलकर आयी कि अभी भी ई बुक्मस को पढने वाले में एकाग्रता की कमी आती जा रही हैवे विषय को बेहतर नहीं समझते।

4–आज वक्त बदल चुका है। लोग बाजार में किताबे खरीदनाना नहीं चाहते बाजार के बुक स्टालों तक पहुंचने वाले पाठक वर्ग की संख्या गिनती की बची है। कहते है कि यह तो किताब का कीडा है। अब ये शब्दों से बना वाक्य इतिहास में कैदा हो गया है एक दौर था जब लोग लेखक उपन्यासकारों के नये एडीशन के लिए बहुत इंतजार किया करते थे।

5–आज के युग में हिन्दी–अग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में भी किताबें–कवितांए सहित समूचा साहित्य इन्टरनेट पर उपलब्ध है। यह उन व्यक्तियों के लिए वरदान है जो आखों से देख नहीं सकते। ई बुक्स बढा ही नहीं सुना भी जा सकता है। बुक्स के अन्तर्गत आप विश्व के नामचीन पाठकों उपन्यासकार, विचारकों, वैज्ञानिकों की भी रचनाएं सामग्री, पढ तथा सुन सकते है।

6–पहले जहां किताबें पढने कई लोग मिल जाते थे परन्तु ई बुक्स पढता कोई न दिखता था। वहीं आज के युग में एक या दो लोग दिख जाते है। टैबलेट अथवा ई बुक्स रीउर पर पढते हुए समय के साथ–साथ ये चलन और बढेगा तथा और अधिक लोग ई बुक्स को अपनाएंगे।

5.0 निष्कर्ष–ज्ञान का भण्डान कही जाने वाली लाइब्रेरी की दुनिया आज कुछ जुदा अन्दाज में हमारे सामने है। वक्त के साथ जो स्वरूप बदला है वा है ई बुक्स की दुनिया। संजय बारू की द एक्सीडेंटल प्राइमिनिस्टर हो या फिर चेतन भगत की रिवोन्यूशन 2020 सुई मोक किड की दि इन्वेंशन आफ विग दुनिया में इन पुस्तकों ने धूम मचाई। बुक स्टाल पर पहुंचने से पहले ही इन्टरनेट के जरिए किताबों पाठकों तथा लेखकों के बीच पहुंच गयी। कुल मिलाकर कहा जाए तो लाइब्रेरी की दुनिया से बाहर निकलकर पाठक ई बुक्स की दुनिया की लाइब्रेरी पसन्द कर रहे है।

ई बुक्स के सस्ता होने के कारण यह है कि इन सब पर पहली बार आने वाली लागत के बाद अमूमन कोई लागत नहीं आती है। एक बार ई बुक प्रकाशित होने के साथ साथ लेखक उसकी अनंत फाइलें बनाने के लिए स्वतंत्र है। इसलिए

लेखक की लागत नहीं आती। इसका लाभ पाठक तक पहुंचता है। भारत में ई बुक्स का ट्रेड तेजी से जोर पकड रहा है। यह एक नये क्षेत्र में उभरते हुए अवसरों का भी संकेत है।

6.0 सन्दर्भ–

1. **Chaerine C. marshall reading and writing the election Books, morgah and clay pool publishers, 2009.**
2. अब आया ई किताबों का जमाना, न्यूज, इन हिन्दी। 27 जनवरी 20069
3. टक्साली कांत रवि, इन्टरनेट एवं ईमेल, टाटा मैक्ग्राहित 2010.
4. ई किताबें, छापे हजारों मन जीते। सारती मार्च 2007।
5. **http://WWWbbc.co uk-com/what is ebook-html-**
6. **http://WWW.dw.de.**